राजनैतिक दल :-

प्रतिनिध्यात्मक अथवा अप्रत्यक्ष लोकतन्त्र में राजनैतिक दलो का होना अनिवार्य है। दलीय आधार पर ही जनता अपने प्रतिनिधियो का चुनाव करते हैं
रा० दल को परिभाषित करते हुए
बर्क ने कहा है कि " एकताबद्ध लोगो का ऐसा निकाय है जो की किसी विशेष सिद्धान्तो पर राष्ट्रीय हितो को बढ़ावा देने के लिए सहमत होते हैं।"

डिजरायली के शब्दों में -
" कुछ आधारभूत सिद्धान्तो का अनुकरण करने के लिए एकिकृत व्यक्तियों के समूह को राजनैतिक दल कहते हैं।"

राजनैतिक दल स्थापना के तीन अनिवार्य तत्व होते हैं
1. यह उन व्यक्तियो का संगठन है जो कम या अधिक मात्रा मे एक विचारधारा पर भरोसा करते हैं।
2. सत्ता प्राप्ति उस संगठन का लक्ष्य होना चाहिए।
3. अपनी नितियो और योजनाओ को लागू करने के लिए संवैधानिक साधनो में विश्वास रखना।

इस तिसरे तत्व के आधार पर यूरोप अमेरिकी विद्वान साम्यवादी दल को राजनैतिक दल के रुप में स्वीकार नही करते क्योंकि वे हिंसा और क्रान्ति का उपयोग करते है। अतः राजनैतिक दल के बारे मे मार्क्सवादी दृष्टिकोण अलग है जिसकी लैनिन ने व्याख्या की।
लैनिन के अनुसार प्रत्येक राजनैतिक दल "वर्ग संगठन" होता है।
लैनिन ने साम्यवादी दल को "सर्वहारा वर्ग" को "हरावल दस्ते के रुप में परिभाषित किया। जिसका कार्य वर्ग-चेतना का विकास कर सर्वहारा वर्ग को क्रान्ति के लिए तैयार करना है।

(2)

राजनैतिक दल की विशेषताएं :-

1. संगठन -
2. सामान्य हितों की एकता
3. संवैधानिक साधनों में विश्वास
4. सत्ता प्राप्ति की इच्छा (सत्ता संघर्ष में सहभागी)
5. राष्ट्रीय हित

"उत्पत्ति"

→ राजनैतिक दल की <u>उत्पत्ति के</u> निर्धारक तत्व :-

* ब्राइस ने लिखा की - राजनैतिक दल उतने ही प्राचीन संस्थाएं हैं दल की उत्पत्ति को निर्धारित करने वाले निम्न प्रमुख तत्व

1. मानव की प्रकृति
2. धार्मिक और सम्प्रदायिक या नसलीय भावनाएं = धार्मिक व साम्प्रदायिक विभिन्नता के कारण प्रत्येक धर्म व सम्प्रदाय के लोग विभिन्न राजनैतिक दलों की स्थापना करते हैं जैसे (जापान में बौद्ध का <u>सोकागक्काई दल</u>, भारत में <u>मुस्लीम लीग</u>, अकाली दल आदि,
3. आर्थिक तत्व या आर्थिक हित -
4. विचारधारा

~~5 भौगोलिक आधार~~

5. क्षेत्रीय आधार
6. ऐतिहासिक संकट के आधार पर → जैसे भारत को स्वतन्त्र कराने के लिए कांग्रेस की स्थापना, दक्षिण अफ्रीका में अफ्रीकी नेशनल कांग्रेस की स्थापना :-
7. व्यक्ति के व्यक्तित्व के प्रभाव के कारण -

→ दलों की उत्पत्ति का <u>सामाजिक समूह का</u> सिद्धान्त दिया - <u>पीटर मर्कल</u>

ला पालोम्बरा व माइरन वीनर "पॉलि. पार्टीज एण्ड पॉलि. डेवलपमेंट" ने दल की उत्पत्ति के तीन सि. - (1) संस्थात्मक सि. - संसद, संस्थात्मक सत्ता का विस्तार, निर्वाचन प्रणाली

(2) ऐतिहासिक संकट सि. - (1) वैधता का संकट (2) सहभागिता (3) प्रादेशिक एकीकरण का संकट

(3) विकासवादी सि. - औद्योगीकरण, शहरीकरण, आधुनिकता

<u>डुवर्जे ने दल की उत्पत्ति के आधार पर दो प्रकार के दल</u> — (1) अंदर से उपजे दल (2) बाहर से उपजे दल

(3)

राजनैतिक दलों के कार्य :-

1. देश के अन्दर जनमत या लोकमत का निर्माण
2. सरकार की स्थापना करना और सरकार का संचालन करना
3. सरकार और जनता के बीच मध्यस्थता
4. राजनैतिक शिक्षा व चेतना का विकास
   लोवेल ने " राजनैतिक दलों को "विचारों के दलाल" कहा।
5. राजनैतिक समाजीकरण व राजनैतिक भर्ती
6. राजनैतिक आधुनिकीकरण
7. देश के लिए योजनाओं व नीतियों का निर्माण
8. समाज कल्याण के कार्य
9. निरंकुशशासन रोकथा - 'जबतक विपक्ष विद्यमान है अधिनायकतन्त्र हो नहीं सकता' - ब्रेसिस

शूर्लट सी लोन ने अपनी पुस्तक "एक्शन एण्ड ऑर्गनाइजेशन" (एक्शन ऑर्गनाइजेशन) में राजनैतिक दल के तीन कार्य बताए -

1. मध्यवर्ती प्रवर्त्य (सरकार व जनता के बीच मध्यस्थता)
2. आश्रित प्रवर्त्य (प्रथम स्तर पर जनता के पीछे फिर सर्वोपरी होने वाला)
3. स्वतन्त्र प्रवर्त्य (समाज और सरकार दोनों पर नियन्त्रण हो जाए और दल अपनी विचार धारा के अनुरूप समाज को निर्मित करें।

राजनीतिक दलों का वर्गीकरण :-

मौरिस दुवर्जे के विचार - "पॉलिटिकल पार्टीस" - Book.

* फ्रांसीसी विचारक दुवर्जे ने अपनी पुस्तक "पॉलिटिकल पार्टिस" में राजनैतिक दलों के संगठन के चार स्तर बतायें -

1. मुंडली (कॉकस) :- (छोटे लोगों का समूह जो की केन्द्रीकृत होता है) ⇒ दल का छोटा सा समूह जिसका आकार जानबूझ कर छोटा रखा जाता है यह विशिष्ट लोगों का समूह ही दल में प्रभावी भूमिका निभाता है अमेरिकी दलीय व्यवस्था को इसका उदाहरण माना जाता है।, ब्रिटिश लेबर पार्टी
2. शाखा (ब्रांच) :- इस व्यवस्था मे जनता के साथ व्यापक जुड़ाव पर जोर दिया जाता है समाजवादी देशों के राजनैतिक दलों की विशेषता है।

* दुवर्जे ने निर्वाचन प्रणाली व दलीय व्यवस्था मे घनिष्ठ सम्बंध है। सापेक्ष बहुमत प्रणाली [illegible] प्रणाली द्विदलीय व्यवस्था को पैदा करती है (दोराहपन का सिद्धांत) उदा० - ब्रिटेन। तथा आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली बहुदलीय व्यवस्था को जन्म मे सहायक (बहुदलीयता सिद्धांत)

3. प्रकोष्ठ (सेल) = व्यवसायिक समुहो के रूप में गठित दल साम्यवादी व फासीवादी देशो की विशेषता है।

4. सैनिक दस्ते (मिलिशिया) = फासीवादी व साम्यवादी दलोकी विशेषता जिसमे दल शस्त्र धारी सैनिकदस्ते रखते हैं।

जैसे - मुसोलिनी का हलचल दस्ता, हिटलर का तुफानी दस्ता अथवा माओ का लाल रक्षा दल

* राजनैतिकदलो की उत्पाति और विकास को लेकर डूवर्जे ने दो प्रकार के दल बताए —

1. भीतर सेउपजे दल (संसद के भीतर से)   2. बाहर से उपजे दल (संसद के बाहर से)

◎ एलन बाल का वर्गीकरण :

एलनबाल नेअपनी पुस्तक "मॉडर्न पालिटिक्स एण्ड गवर्नमेंट" में दलो की संख्या, उनकी संरचना और शक्ति के आधार पर सात प्रकार की दलीय व्यवस्था बताई।

1. अस्पष्ट द्विदलीय प्रणाली :- अमेरिका व आयरलैण्ड में द्विदलीय होने के बादभी वैचारिक अन्तर नही होता है।

2. सुस्पष्ट द्विदलीय व्यवस्था = दो दल है मगर वैचारिक अन्तर भी है। जैसे ब्रिटेन (लेबरपार्टी व कन्जेरटीव पार्टी)
द्विदलीय व्यवस्था जिनमे वैचारिक अन्तर भी है जैसे ब्रिटेन व [illegible]

3. कार्यवाह बहुदलीय व्यवस्था :- दो से अधिक दल होते हुए भी स्पष्टद्विदलीय पद्धति के समान आचरण (स्वीडन व नार्वे में है)

4. अस्थिर बहुदलीय व्यवस्था :- जिसमे बहुत दल होते है मगर सरकारे अस्थिर होती है इटली

5. प्रभावी दल पद्धति - बहुदलीय होतेहुए भी किसी एक दलकी ही प्रधानता उदाहरण- भारत, मैक्सिको

6. एक दलीय व्यवस्था = एक दलकी व्यवस्था होने के बावजूद सर्वाधिकारवाद का अभाव (बर्मा, तनजानीया, केनिया)

7. सर्वाधिकारवादी एकदलीय व्यवस्था - एकहीदल और सारी शक्तिया व अधिकार उसी के पास जैसे- चीन, रूस

तिना
1. दलों की [illegible]
2. दलों की [illegible] की प्रकृति
4. दलों में [illegible] की मात्रा

* [illegible] और [illegible] का [illegible] - ने अपनी पुस्तक "[illegible] पॉलिटिकल पार्टीज़ पॉलिटिकल सर्वे" में चुनावी प्रतियोगिता के आधार पर दो दलीय व्यवस्था बताई

1. प्रतियोगी दलीय व्यवस्था - जिन देशों में राजनैतिक दल स्वतंत्रता [illegible] चुनाव कार्यों में भाग लेते तथा संवैधानिक व वैधानिक तरीके से विभिन्न दलों में सत्ता परिवर्तित हो तो उसे प्रतियोगी दलीय प्रणाली कहते हैं। द्विदलीय व बहुदलीय व्यवस्था वाले राष्ट्रों को इसमें शामिल किया गया।

2. अप्रतियोगी दलीय प्रणाली - जहाँ चुनाती दलों को चुनावी प्रक्रिया में भाग लेने का अधिकार नहीं होता एक ही दल की सत्ता कार्यपालिका और नेतृत्व इतना ताकतवर हो की अन्य दलों की उपस्थिति नगण्य हो जैसे - साम्यवादी देश (चीन, रूस)

* राजनैतिक दलों की उपयोगिता बताते हुए लास्की ने लिखा की - "राजनैतिक दल देश में सीजरवाद से रक्षा करने का सर्वोत्तम साधन है।"
(निरंकुशता) [illegible] शासन

* लार्ड के शब्दों में "दलीय व्यवस्था भले के लिए हो अथवा बुरे के लिए लोकप्रिय शासन प्रणाली में अनिवार्य होती है।

* यूने तथा [illegible] ने अपनी पुस्तक "डेमोक्रेसी एण्ड अमेरिकन पार्टी सिस्टम" में राजनीतिक दल की कार्यात्मक परिभाषा दी है।

* रॉबर्ट सी बोन - "एलसम एण्ड ऑरगेनाइजेशन : एन इन्ट्रोडक्शन टू कन्टेम्पोररी पॉलिटिकल साइंस" में राजनीतिक दल की संरचनात्मक-कार्यात्मक आधार पर परिभाषा की है।

→ दलों का लोकतंत्रीय केन्द्रवाद सिद्धान्त दिया - लेनिन
→ दलों का व्यावहारिक अध्ययन - हर्बर्ट वेस्ट

→ सारटोरी ने "द [illegible] ऑफ पार्टी सिस्टम" में [illegible] पर [illegible] - (i) रा. दलों की [illegible] (ii) दलों की [illegible] (iii) दल के [illegible]

→ जीन ब्लान्डेल ने पांच प्रकार की दलीय व्यवस्था - (i) एकदलीय (ii) द्विदलीय (iii) ढाई दलीय (iv) एक दल प्रभावी बहुदलीय (v) बहुदलीय

→ पालोम्बरा की Book "पॉलिटिक्स विदइन नेशन्स"

(6)

दबाव समूह :-

समूह एक सामाजिक व्यवहार है राजनीति विज्ञान में आर्थर बेंटले ने समूह की अवधारणा प्रतिपादित की जब कोई समूह अपने सामूहिक हितों के लिए संगठित होकर कार्य करे तब उसे दबाव समूह कहते हैं।

दबाव समूह किसी भी ऐसे संगठित समूह का नाम है जो प्रशासनिक समूह को विधिक से अपने हित की पूर्ति के लिए प्रयोग करता है और राजनीतिक प्रक्रिया को प्रभावित करता है।

आइवर जेनिंग्स ने इसे परिभाषित करते हुए लिखा की "हित समूह अथवा दबाव समूह से हमारा तात्पर्य शासन के ढांचे बाहर स्वैच्छिक रूप से संगठित ऐसे समूहों से होता है जो प्रशासनिक अधिकारियों की नियुक्ति निर्वाचन और नीतियों को प्रभावित करने में प्रयत्नशील रहते हैं।"

दबाव समूह के लक्षण :-

दबाव समूह न तो हित समूहों की तरह पूरी तरह से अराजनैतिक होते हैं और न ही राजनैतिक दलों की तरह पूरी तरह राजनैतिक होते हैं। इनके निम्न प्रमुख लक्षण हैं।

1. औपचारिक संगठन
2. समान हित
3. सर्वव्यापक – रॉबर्ट ब्लोन्डेल के शब्दों में "दबाव समूह सभी राजनैतिक व्यवस्थाओं में यहां तक की सर्वाधिकारवादी व्यवस्थाओं में भी पाये जाते हैं"
4. ऐच्छिक सदस्यता
5. अनिश्चित कार्यकाल
6. राजनैतिक क्रिया अभिमुखीकरण

* जीन ब्लोन्डेल, रॉबर्ट डाल, जेम्स मेडिसन, फाइनर आदि दबाव समूह व हित समूह में कोई अंतर नहीं करते।

दबाव समूहों का वर्गीकरण

दबाव समूह इतने बहुसंख्यक तथा विविधता वाले होते हैं कि इनका वर्गीकरण कठिन होता है। इन्हें अस्थायी व स्थायी, औपचारिक व अनौपचारिक अल्पकालिन अथवा दीर्घकालिन आदि में वर्गीकृत किया जा सकता है।

ब्लोन्डेल का वर्गीकरण

जीन ब्लोन्डेल ने दबाव समूहों को 1 साम्प्रदायिक 2 संसर्गात्मक दबाव समूहों में बाटा।

साम्प्रदायिक दबाव समूह

(1) जिन दबाव समूहों की उत्पत्ति व्यक्तियों के सामाजिक सम्बन्धों के आधार पर होती है उसे साम्प्रदायिक अथवा सामाजिक दबाव समूह कहते हैं। ⇒ इसकी सदस्यता जन्मजात होती है इसमें प्रतिमानित तथा स्थायी संबंध पाये जाते हैं। परिवार, जाति, वर्ग, धर्म आदि के आधार पर निर्मित समूह इसके उदाहरण हैं। इसे पुनः दो भागों में बाटा जा सकता है।

1. प्रथागत दबाव समूह 2. संस्थागत दबाव समूह

ब्लोन्डेल का वर्गीकरण - An Introduction to Comparative Government

- (1) साम्प्रदायिक
  - प्रथागत दबाव समूह (वंशानुगत)
  - संस्थागत दबाव समूह (जाति)
- (2) संसर्गात्मक
  - 1. संरक्षणात्मक दबाव समूह
  - 2. प्रोत्साहनात्मक दबाव समूह

(2) ब्लोन्डेल ने उन समूहों को जिनका विशिष्ट लक्ष्य होता है तथा उन लक्ष्यों की पूर्ति के लिए ही जिन दबाव समूहों की स्थापना होती है उसे संस्थागत या संसर्गात्मक दबाव समूह कहते हैं। इन दबाव समूहों में उद्देश्यों के आधार पर संबंध होते हैं इसकी सदस्यता स्वैच्छिक होती है। तथा संगठन औपचारिक होता है। यह भी दो प्रकार के होते हैं

(1) संरक्षणात्मक दबाव समूह (2) प्रोत्साहनात्मक दबाव समूह

(1) ⇒ संरक्षणात्मक दबाव समूह का उद्देश्य अपने समूह के विशिष्ट हितों का संरक्षण करना होता है। जैसे विद्यार्थियों, व्यापारियों, किसानों व उद्योग पतियों के समूह।

(6) उत्थात्मक दबाव समूह वे होते हैं जिसका गठन किसी विशेष विचारों के उत्थान हेतु होता है जैसे - वन्य जीवों की सुरक्षा के लिए गठित एवं पड़ोसी देशों के साथ अच्छे सम्बन्धों के लिए गठित दबाव समूह।

"आमण्ड का वर्गीकरण"

आमण्ड ने चार तरह के दबाव समूहों का वर्णन किया।

1. संस्थागत दबाव समूह:- दबाव समूह का यह प्रकार आमण्ड द्वारा आविष्कृत नया समूह है। इसमें व्यवस्थापिका कार्यपालिका, न्यायपालिका, नौकरशाही आदि को आमण्ड दबाव समूह मानता है जो अन्य अंगों की तुलना में शक्तिशाली होने की कोशिश करते हैं।

2. संघबद्ध / समुदायात्मक दबाव समूह= जो समूह औपचारिक रूप से गठित होते हैं जो पंजीकृत होते हैं जिनका लेखा-जोखा रखा जाता है और जो नियमों पर आधारित होता है। जैसे- मजदूर, किसान, महिला समूह आदि।

3. संघेतर / गैर समुदायात्मक दबाव समूह- जो समूह अनौपचारिक रूप से भाईचारा धर्म रक्त आदि पर आधारित हो उसे संघेतर दबाव समूह कहते हैं जैसे= जातीय और धार्मिक दबाव समूह

→ वास्तव में ब्लोंडेल जिसे साम्प्रदायिक दबाव समूह कहता है आमण्ड उसे संघेतर दबाव समूह कहता है।

4. अकस्मात / प्रदर्शनात्मक / चमत्कारिक दबाव समूह:- जो दबाव समूह भीड़ प्रदर्शन आन्दोलन आदि के रूप में अचानक ही पैदा और लुप्त हो जाए उसे चमत्कारिक दबाव समूह कहते हैं। इनकी कार्यप्रणाली नियोजित नहीं होती है। क्रान्तिकारी व उग्रवादी संगठन इसके उदाहरण हैं।

① संस्थागत दबाव समूह — व्यवस्थापिका, कार्यपालिका व न्याय पालिका आदि
② संबंद्ध दबाव समूह — किसान / मजदूर / विद्यार्थी
③ संघेत्तर / गैर समुदायात्मक — जाति धर्म
④ अकस्मात / चमत्कारिक — क्रान्तिकारी हिंसात्मक

रॉबर्ट बोन का वर्गीकरण :—

बोन ने दबाव समूहों को दो प्रकार बताये हैं।
(1) परिस्थितिजन्य दबाव समूह ② अभिवृद्धिजन्य दबाव समूह

① परिस्थितिजन्य दबाव समूह :— जो दबाव समूह अपने सदस्यों की वर्तमान अवस्था को बनाये रखने अथवा उसमें सुधार करने के उद्देश्य से गठित होते हैं तो उसे परिस्थितिजन्य दबाव समूह कहते हैं। यह दबाव समूह अनौपचारिक, विशिष्ट और दीर्घकालीन उद्देश्यों के लिए गठित होते हैं। उदाहरण — व्यापारी, किसान, मजदूर संघ

② अभिवृद्धिजन्य दबाव समूह :— जिन दबाव समूह का उद्देश्य जन कल्याण होता और जिसके सदस्य किन्हीं सामान्य मूल्यों के बारे में सामूहिक निष्ठा रखते हो तो उसे अभिवृद्धि जन्य दबाव समूह कहते हैं जैसे — वन्य जीवों के प्रति सुरक्षा के दबाव समूह अथवा परमाणु हथियारों के प्रयोग पर रोक से सम्बन्धित दबाव समूह

x — x — x — x — x

एकस्टेन	आमण्ड	बोन
① संरक्षणात्मक दबाव समूह	संबद्ध / समुदायात्मक दबाव समूह	परिस्थिति जन्य दबाव समूह
② सम्प्रदायिक दबाव समूह	आमण्ड का संघेत्तर दबाव समूह	
③ उत्पादक दबाव समूह		अभिवृद्धि जन्य दबाव समूह